पुरोवाक्

हिन्दी के वशस्वी कथाकार श्री भीष्मसाहनी हमेशा भारतीय समाज से जुड़ते रहे और इसलिए वे हमारे उपन्यासों में चित्रित समस्याओं को समकालीन राजनैतिक सामाजिक समस्याओं से अलगाना संभव नहीं है। अतः मैंने ‘भीष्मसाहनी के उपन्यास : भारतीय राजनैतिक सामाजिक सन्दर्भ में’ को अपने शोध का विषय बनाया है।

यह शोध प्रांबंध पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है। अपने परिवेश से प्रभावित साहित्यकार होने के कारण भीष्मजी के व्यक्तित्व की पहचान आवश्यक है। इसलिए प्रथम अध्याय में कथाकार भीष्मसाहनी की जीवनरेखा एवं उनके सृजनात्मक व्यक्तित्व का परिचय दिया है। भीष्मसाहनी के नाटककार, निबंधकार, अनुवादक, संपादक जैसे विभिन्न पहलुओं का परिचय इस अध्याय में हुआ है। भीष्मसाहनी की सर्जनात्मकता की शुरुआत स्वातंत्र्योत्तर युग में हुई। उनका प्रथम उपन्यास ‘झरोखे’ सन् १९६६ में प्रकाशित हुआ। दूसरे अध्याय में साहोतर हिन्दी उपन्यास की विभिन्न गतिविधियों का एक अवलोकन हुआ है।

तीसरे अध्याय में स्वतंत्र भारत की सामाजिक राजनैतिक समस्याओं का विश्लेषण किया गया है। स्वतंत्र भारत हमेशा समस्याओं से ग्रस्त रहा। विभिन्न धर्म, संप्रदाय एवं स्तर के लोगों की मातृभूमि भारत की सामाजिक राजनैतिक परिस्थिति में समय-समय पर परिवर्तन दिखायी देता है। उपन्यासकार-भीष्मसाहनी ने इनका चित्रण अपने उपन्यासों में किया है। चौथे अध्याय में भीष्मजी के सातों उपन्यासों का एक संहारलोक हुआ है। पाँचवें अध्याय में भीष्मसाहनी के सात उपन्यासों में चित्रित भारतीय सामाजिक तथा राजनैतिक समस्याओं का विश्लेषण हुआ है। इन उपन्यासों में चित्रित सामाजिक राजनैतिक विसंगतियों के समाधान पर भी उन्होंने
बल दिया है। ‘झारखंड’ से ‘नीलू नीलिमा नीलोफर’ तक के उनके सारे
उपन्यास समकालीन भारतीय सामाजिक राजनैतिक समस्याओं का दस्तावेज
है। उपसंहार में पूर्व अध्यायों के विवेचन का सार प्रस्तुत करते हुए निष्कर्ष
के रूप में अपना मत प्रकट किया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध तिरुवनंतपुरम सरकारी महिला महाविद्यालय के
हिंदी विभाग की अध्यक्ष एवं रीडर डॉ.सी.जे.प्रसन्नकुमारी के निर्देशन में
संपन्न हुआ है। उनकी बहुमुखी सुझावों से में लाभान्वित हुई हूँ। उनकी
प्रेरणा, प्रोत्साहन तथा मार्गदर्शन ही इस शोध प्रबंध का आधार है। उनके
प्रति में तहे दिल से आभार हूँ। सरकारी महिला महाविद्यालय के भौतिक
शास्त्र विभाग के सीनियर ग्रेड लेक्चर वी. के. जयकुमार, और यूनिवर्सिटी
कॉलेज के मलयालम विभाग के रीडर डॉ.बी.वी. शशिकुमार के प्रति भी में
आभार हूँ। सरकारी महिला महाविद्यालय के हिंदी विभाग के सभी
प्राध्यापिकाओं, पुस्तकालय के सभी कर्मचारियों तथा ऑफिस के कर्मचारियों
जिन्होंने समय - समय पर र्सी मदद की है इनके प्रति भी में आभार हूँ।
टकण को सुरुचिपूर्ण बनाने में श्रीमती. लाली. एस. का बड़ा हाथ है। उसके
प्रति भी में आभार हूँ। अपने परिवार के प्रति विशेषतः मेरे पति के प्रति भी
में अनगी हूँ क्योंकि इस शोध प्रबंध के पीछे उनका त्याग है। टकण की
चुटियों के लिए क्षमाप्रार्पण हूँ।

सबको और एक बार धन्यवाद देती हुई जगदीश्वर के प्रति में स्वयं
समर्पित हूँ। जगदीश्वर ने मेरे प्रति कृपा दिखायी है जिनके कारण में यह
शोध प्रबंध प्रस्तुत कर सकी हूँ।

तिरुवनंतपुरम
2008.2009

शालिनि.एन.सी
शोधकत्री